गणतंत्र दिवस पर परेड में सिर्फ नारी शक्ति का

प्रदर्शन

देश के 75वें गणतंत्र दिवस पर कर्तव्य पथ पर निकलने वाली परेड में महिलाओं ने जमकर हिस्सा लिया। जिसकी थीम थी 'विकसित भारत और भारत-लोकतंत्र की मातृका'। परेड का आगाज 100 महिला कलाकार शंख, नगाड़े और दूसरे पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ हुई। इसके अलावा परेड में 1500 महिलाएं ने अपने पारंपरिक पहनावे से नृत्य किया था। पहली बार तीनों सेनाओं की एक महिला टुकड़ी ने भी मार्च किया था। इसका मकसद था जेंडर इक्वेलिटी (लैंगिक समानता) और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए यह फैसला लिया गया है।

भारत एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है, जहां महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान रहा है। ग्रामीण परिदृश्य में महिलाओं की बड़ी आबादी है। आजादी के बाद महिलाओं का समाज में सम्मान बढ़ा, लेकिन उनके सशक्तिकरण की गति दशकों तक धीमी रही। गरीबी व निरक्षरता महिलाओं की प्रगति में गंभीर बाधा रही हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल के माध्यम से

महिलाओं को व्यवसाय की ओर प्रोत्साहित कर इन्हें आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है। विशेषकर कृषि प्रसंस्करण उद्योगों, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटलीकरण की सहायता से महिलाओं के सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण की शुरुआत की जा सकती है।

विकास की बदलती तस्वीर में

सशक्त महिलाओं की

विशिष्ट भागीदारी

साल 2024 महिला दिवस थीम

पिछले साल अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की थीम 'एम्ब्रेस इक्विटी' पर रखी गई थी। साल 2024 में वुमेन्स डे की थीम 'इंस्पायर इंक्लूजन' है, जिसका अर्थ एक ऐसी दुनिया,जहां हर किसी को बराबर का हक और सम्मान मिले।

ऐसा रहा राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का

राष्ट्रपति भवन तक का सफर

प्रतिभा पाटिल के बाद द्रौपदी मुर्मू के रूप में देश को अपनी दूसरी महिला राष्ट्रपति मिली हैं। द्रौपदी मुर्मू दूसरी महिला राष्ट्रपति होने के साथ ही पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति भी हैं। भले ही द्रौपदी मुर्मू आज देश के सर्वोच्च पद पर आसीन हैं, लेकिन इस पद तक पहुंचने के लिए उनका सफर आसान नहीं था। संघर्षों से भरे जीवन को पार करके, परिवार की कठिनाइयों का सामना करने के बाद द्रौपदी मुर्मू के नाम पर यह गौरव जुड़ गया है।

आदिवासी परिवार में जन्म

द्रौपदी का जन्म ओडिशा के मयूरगंज जिले के बैदपोसी गांव में 20 जून 1958 को हुआ था। द्रौपदी संथाल आदिवासी जातीय समूह से संबंध रखती हैं। उनके पिता का नाम बिरांची नारायण टुडू एक किसान थे। द्रौपदी के दो भाई हैं। भगत टुडू और सरैनी टुडू। द्रौपदी की शादी श्यामाचरण मुर्मू से हुई। उनसे दो बेटे और दो बेटी हुई। साल 1984 में एक बेटी की मौत हो गई। द्रौपदी का बचपन बेहद अभावों और गरीबी में बीता था। लेकिन अपनी स्थिति को उन्होंने अपनी मेहनत के आड़े नहीं आने दिया। उन्होंने भुवनेश्वर के रमादेवी विमेंस कॉलेज से स्नातक तक की पढ़ाई पूरी की। बेटी को पढ़ाने के लिए द्रौपदी मुर्मू शिक्षक बन गईं।

कॉलेज जाने वाली गांव की पहली लड़की

मुर्मू की स्कूली पढ़ाई गांव में हुई। साल 1969 से 1973 तक वह आदिवासी आवासीय विद्यालय में पढ़ीं। मुर्मू अपने गांव की पहली लड़की थीं, जो स्नातक की पढ़ाई करने के बाद भुवनेश्वर तक पहुंची।

ऐसे शुरू हुआ राजनीतिक सफर

राजनीति में आने से पहले मुर्मू ने एक शिक्षक के तौर पर अपने करियर की शुरुआत की थी। उन्होंने 1979 से 1983 तक सिंचाई और बिजली विभाग में जूनियर असिस्टेंट के रूप में भी कार्य किया। इसके बाद 1994 से 1997 तक उन्होंने ऑनरेरी असिस्टेंट टीचर के रूप में कार्य किया था।

1997 में उन्होंने पहली बार चुनाव लड़ा। ओडिशा के राइरांगपुर जिले में पार्षद चुनी गईं। इसके बाद वह जिला परिषद की उपाध्यक्ष भी चुनी गईं। वर्ष 2000 में विधानसभा चुनाव लड़ीं। राइरांगपुर विधानसभा से विधायक चुने जाने के बाद उन्हें बीजद और भाजपा गठबंधन वाली सरकार में स्वतंत्र प्रभार का राज्यमंत्री बनाया गया।

2002 में मुर्मू को ओडिशा सरकार में मत्स्य एवं पशुपालन विभाग का राज्यमंत्री बनाया गया। 2006 में उन्हें भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया। 2009 में वह राइरांगपुर विधानसभा से दूसरी बार भाजपा के टिकट पर चुनाव जीतीं। इसके बाद 2009 में वह लोकसभा चुनाव भी लड़ीं, लेकिन जीत नहीं पाईं। 2015 में द्रौपदी को झारखंड का राज्यपाल बनाया गया। 2021 तक उन्होंने राज्यपाल के तौर पर अपनी सेवाएं दीं।

राष्ट्रपति का चुनाव जीतने के साथ ही वह देश की पहली आदिवासी राष्ट्रपति बनी। इसके साथ ही 64 साल की द्रौपदी राष्ट्रपति पद पर पहुंचने वाली सबसे कम उम्र की शख्सियत बनेंगी।

असाधारण महिला वैज्ञानिक हैं जिन्होंने अपने नवीन अनुसंधान और अभूतपूर्व खोजों से भारत को गौरवान्वित किया है।

इन महिलाओं ने बनाई मिसाइल महिला के रूप में पहचान

टेस्सी थॉमस

टेसी थॉमस, जिन्हें भारत की मिसाइल महिला के रूप में जाना जाता है, ने भारत के बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें भारत में मिसाइल परियोजना का नेतृत्व करने वाली पहली महिला वैज्ञानिक होने का गौरव प्राप्त है, जिन्होंने एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सुनीता सारावागी

आईआईटी बॉम्बे की प्रतिष्ठित प्रोफेसर सुनीता सरावगी को डेटाबेस और डेटा माइनिंग में उनके अभूतपूर्व शोध के लिए जाना जाता है। उनका काम बड़े डेटासेट से मूल्यवान अंतर्दृष्टि निकालने, डेटा प्रबंधन प्रणालियों में क्रांति लाने पर केंद्रित है।

सुधा भट्टाचार्य

भट्टाचार्य के काम को वैश्विक प्रशंसा मिली है, जिससे उन्हें सम्मानित फेलोशिप और पुरस्कार मिले हैं, जिसमें भारतीय विज्ञान अकादमी और राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत से मान्यता भी शामिल है। उनके नवीन निष्कर्षों ने परजीवी रोगों के बारे में हमारी समझ को गहरा कर दिया है, जिससे नए चिकित्सीय हस्तक्षेपों का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

निगार शाजी

भारतीय एयरोस्पेस इंजीनियर निगार शाजी 1987 में इसरो में शामिल होने के बाद से देश के अंतरिक्ष अन्वेषण का अभिन्न अंग रही हैं। विशेष रूप से, वह भारत के पहले सौर मिशन, आदित्य-एल1 की परियोजना निदेशक थीं।

टेस्सी थॉमस

सुनीता सारावागी

निगार शाजी

सुधा भट्टाचार्य

चंद्रयान-3 के पीछे इन महिलाओं ने निभाई

अहम भूमिका

भारत की पूरे विश्व में वाहवाही हो रही है। चंद्रमा की सतह पर चंद्रयान-3 के पहुंचते ही हमारा देश साउथ पोल पर पहुंचने वाला पहला देश बन गया है। चंद्रयान की सफलता की बात हो रही है, तो हमें उसके पीछे मेहनत कर रहे धुरंधरों की भी प्रशंसा करनी चाहिए। आइए जानते हैं चंद्रयान 3 के पीछे किन महिलओं ने अहम भूमिका निभाकर रूढ़िवादी विचारों को मुंहतोड़ जवाब दिया है।

डॉ. रितु कारिधाल

कल्पना कालाहस्ती

डॉ. रितु कारिधाल

द्रयान-3 की लैंडिंग की जिम्मेदारी के पीछे डॉ. रितु कारिधाल ने महत्वपूर्ण रोल निभाया। रितु कारिधाल वरिष्ठ महिला वैज्ञानिक और चंद्रयान-3 की मिशन परियोजना की एसोसिएट डायरेक्टर हैं। इससे पहले वो चंद्रयान -2 परियोजना में भी शामिल रही हैं।

मुथैया वनिता इसरो

मुथैया वनिता इसरो

मुथैया वनिता इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम इंजीनियर हैं। हार्डवेयर परीक्षण से लेकर चंद्रयान-2 चंद्र मिशन के परियोजना निदेशक बनने तक, उन्होंने कई अलग-अलग परियोजनाओं में काम किया है।

कल्पना कालाहस्ती

कल्पना कालाहस्ती चंद्रयान -3 डायरेक्टर हैं। कल्पना कालाहस्ती चित्तूर जिले की रहने वाली हैं और उन्होंने चेन्नई में बीटेक ईसीई की शिक्षा ली है।

अनुराधा टी.के

अनुराधा टी.के सेवानिवृत्त भारतीय वैज्ञानिक इसरो और विशेष संचार उपग्रहों की परियोजना निदेशक थीं। अनुराधा 1982 में अंतरिक्ष एजेंसी में शामिल हुईं और सभी उपग्रह परियोजना निदेशक बनने वाली पहली महिला थीं।

गगनदीप कांग

प्रसिद्ध भारतीय माइक्रोबायोलॉजिस्ट गगनदीप कांग ने 2019 में रॉयल सोसाइटी की फेलो के रूप में चुनी गई पहली भारतीय महिला के रूप में इतिहास रचा। उन्हें 2016 में लाइफ साइंसेज में प्रतिष्ठित इंफोसिस पुरस्कार मिला और उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिसमें रॉयल कॉलेज ऑफ पैथोलॉजिस्ट और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से फेलोशिप शामिल है।

इस महिला के संघर्षों के कारण

बदलना पड़ा

रेप कानून

देश में बदलाव लाना इतना आसान नहीं होता जितना बातों से लगता है। यह बात हम यूं ही नहीं कह रहे हैं। देश में आने वाले हर एक बदलाव के पीछे किसी की जिंदगी खत्म हो जाती है तो कोई लड़ते-लड़ते खुद की जान खतरे में डाल देता है। आज हम आपको एक ऐसी महिला के बारे में बताने जा रहे हैं जिसके संघर्षों के कारण भारत में बने रेप कानून में बड़ा बदलाव आया। एक ऐसी महिला जिन्हें बाल-विवाह जैसी कुप्रथा को रोकने के लिए खुद की इज्जत दांव पर लगाना पड़ा था। वो थी उत्तर प्रदेश के भतेरी गांव में रहने वाली भंवरी देवी ने सदियों पुरानी कुप्रथा को हटाने के लिए कठिन लड़ाई लड़ी। 1980 और 1990 के दशक में भंवरी देवी का नाम ग्रामीण नारीवाद के एक ब्रांड की तरह थी जो कुप्रथा के खिलाफ नेतृत्व परिवर्तन के लिए एक मिसाल बना था।

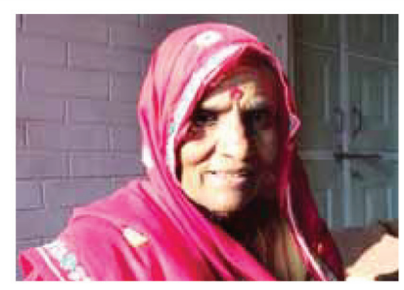

महिला दिवस मनाने के पीछे का इतिहास

इस दिन की शुरुआत कुछ इस तरह हुई। साल 1908 में अमेरिका की सड़को पर वर्कर प्रोटेस्ट हुआ था। इस आंदोलन में करीब 15 हजार महिलाएं शामिल हुई, जो न्यूयॉर्क की सड़कों पर अपने हक (नौकरी और मेहनताना बढ़ाया जाए) की मांग कर रही थी। इसके साथ ही इस मांग में महिलाओं के मतदान करने की मांग भी शामिल थी। इस बात की खबर जब सरकार को हुई उसके एक साल 1909 में अमेरिका की सोशलिस्ट पार्टी ने महिला दिवस मनाने का घोषणा की।

आखिर 8 मार्च को ही क्यों चुना गया

अब सवाल आता है कि आखिर इस दिवस को मनाने के लिए 8 मार्च यानी आज ही क्यों चुना गया तो आपको बता दें कि 8 मार्च को अमेरिका की वर्कर महिलाओं ने अपने अधिकारों की मांग के लिए आवाज उठाई थी। जिसके बाद सोशलिस्ट पार्टी ने इस दिवस को मनाने का एलान किया। साल 1917 में फर्स्ट वर्ल्ड वार के दौरान रूस की महिलाओं ने ब्रेड और पीस के लिए आंदोलन किया। इस आंदोलन के बाद रूस के सम्राट निकोलस ने अपने पद से इस्तीफा दिया और महिलाओं के मतदान को अनुमति मिली। इस सभी स्थितियों को देखते हुए यूरोप की महिलाओं ने 8 मार्च को पीस ऐक्टिविस्ट्स का समर्थन करते हुए रैलियां निकाली। इन कारणों की वजह से 1975 में संयुक्त राष्ट्र ने 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की मान्यता दे दी।